प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 39 * AUG 2010 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Voice 01.mp3	33				भ०जगत के अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं,मायारूपी पवन से तरंगों की भाँति जगत उत्पन्न-विलीन होता है,एक जल ही सत्य है	***
2	Voice 02.mp3	32			१	श्रीमद्भागवत्-प्रथमस्कन्ध,प्रथमअध्याय,प्रथमश्लोक के ४ चरण भगवान का **स०नि०, स०सा०, निनि० दृष्टांत व स्वरूप निरूपण**	भूमि
3	Voice 03.mp3	15				गीता २/५५: हमारे अधिष्ठान आत्मा में जा०स्व०सु० अध्यास रूप हैं, आत्मा के अज्ञान से ही यह सर्परूप जगत भासता है अतः जगत की कामनाओं को छोड़ दो एवं अपनी आत्मा से ही आत्मा में संतुष्ट हो जाओ, **आत्मा में स्थिर मन बुद्धि ही स्थितप्रज्ञ हैं**	***
4	Voice 04.mp3	29			२	श्रीमद्भागवत् श्लोक१: सत्यं ज्ञानं अनंतम् **शुद्ध ब्रह्म नि०नि०** है, माया को स्वीकार कर शुद्ध ब्रह्म ही **स०नि० ईश्वर** कहलाता है अविनाशी अजन्मा ब्रह्म स्वेच्छा से माया को वश में कर जन्म लेता हुआ सा-**स०सा० राम-कृष्ण/विश्व-विराट** रूप में दीखता है	निरूपण
5	Voice 05.mp3	31				गीता २/५५: हमारा स्वरूप सच्चि०है,निद्रा-माया की आवरण+विक्षेप शक्ति से जगत भास रहा है,**सामान्य** व **विशेष आनंद** निरू०	Imp
6	Voice 06.mp3	30			३	चातुश्लोकीभागवत-नारायण का ब्रह्मा को ज्ञानोपदेश, सृष्टि से पूर्व एक मैं ही था सृष्टि मेरी माया से है, तुम भी मुझसे अभिन्न हो	नि०
7	Voice 07.mp3	34				ब्रह्म, माया, ईश्वर, जीव-कूटस्थ ब्रह्म और जगत का स्वरूप निरूपण **चिदाभास की ७ अवस्थाऐं** एवं **६ अनादि वस्तुऐं**	Imp
8	Voice 08.mp3	32			४	श्रीमद्भागवत् १/१/१ - भगवान का स०नि०,स०सा०,निनि० स्वरूप निरूपण भगवान ही दर्पण हैं व द्रष्टा भी हैं, दृश्य माया है	नि०
9	Voice 09.mp3	42				ब्रह्मोपनिषद-भ०की अव्यक्त शक्ति पुरुष की छाया के समान माया का स्वरूप निरू० **सृष्टिक्रम चिदाभास की ७ अवस्थाऐं**	Imp
10	Voice 10.mp3	32			५	श्रीमद्भागवत् श्लोक१ : नि०नि०शुद्ध ब्रह्म का स्वरूप सच्चिदानंद है ब्र० से पुरुष की छाया की तरह जड़ माया का प्रादुर्भाव हुआ पुरुष चेतन व माया जड़ है तो भी **माया का ब्रह्म से कभी वियोग नहीं होता जैसे तरंग का जल से,**देव एक व देवालय अनेक हैं	अति विशेष
11	Voice 11.mp3	38				**सृष्टिक्रम ब्रह्मोपनिषद** + **तैत्रीय** उपनिषदानुसार जगत उत्पत्ति, २५ तत्त्व का स्थूल एवं १६ तत्त्व की सूक्ष्म देह विस्तृत संरचना	
12	Voice 12.mp3	31			६	श्रीमद् भागवत् १/१/१ - भगवान का स०नि०,स०सा०, निनि०-मरुभूमि जगत-मृगतृष्णा एवं रज्जु-सर्प का दृष्टांत व स्वरूप निरू०	नि०
13	Voice 13.mp3	34				भ०जगत के अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है-मकड़ी, **सृष्टिक्रम**-ब्रह्मो०+तैत्रीय+छा०उ०+मुण्डक **ब्रह्म का स्वरूप व तटस्थ लक्षण**	अ
14	Voice 14.mp3	32				गीता १३/२,३ : **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं,**सभी दृश्य जड़ देह क्षेत्र व द्रष्टा जीवात्मा क्षेत्रज्ञ है तीनों देहों की विस्तृत संरचना	विशेष
15	Voice 15.mp3	34				गीता २/१६ : **दो ही पदार्थ हैं सत्**-द्रष्टा का ३नों काल में अभाव नहीं होता, **असत्**-दृश्य जो ३नों काल में नहीं है, **अजातवाद**	विशेष
16	Voice 16.mp3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
17	Voice 17.mp3	45				गीता १५/१६-१८ : **३ पुरुष हैं क्षर :** जा०स्व० **अक्षर :** सु०प्रकृति, **उत्तम :** चल क्षर-अक्षर का अधिष्ठान अचल दृष्टा आत्मा	विशेष
18	Voice 18.mp3	30			1	सीताजी द्वारा हनुमानजी को भ०राम का **नि०नि० स्वरूप निरूपण** आरम्भ, जीव ईश्वर का अभेद, हनुमानजी शंकर का अवतार	
19	Voice 19.mp3	49				ओंकार भ० का श्रेष्ठतम नाम, भ०से सर्वप्रथम ओंकार अथवा प्रकृति/त्रिगु०/माया/प्रणव प्रादुर्भाव, **ओंकार का स्वरूप निरूपण**	विशेष
20	Voice 20.mp3	28			2	सीताजी द्वारा भगवान राम का **नि०नि० स्वरूप निरूपण** : ज्ञानरूपी आकाश भगवान में ये जगत मुझ मायारूपी मेघ की बरसात है	
21	Voice 21.mp3	45				भगवान के ज्ञान के लिये **४ कृपाऐं** आवश्यक हैं-१ईश्वर २वेद ३गुरु ४आत्म जीव-ईश्वर का अभेद व स्वरूप ज्ञान ही मोक्ष है	
22	Voice 22.mp3	31			3	सीताजी द्वारा भगवान राम का **नि०नि० स्वरूप निरूपण** :अनंत चिदाकाश राम के तिलभर देश में मैं ही जगत का सृजन करती हूँ	
23	Voice 23.mp3	47			a	वेद विहित कर्म को **धर्म** कहते हैं वही **कर्म** है, वेद विरुद्ध कर्म **विकर्म** है, **अकर्म** निरूपण शेष, सामान्य एवं विशेष धर्म निरूपण	
24	Voice 24.mp3	46			b	**धर्म - कर्म विकर्म अकर्म** एवं सामान्य एवं विशेष धर्म निरूपण, **अकर्म** निरूपण शेष है	
25	Voice 25.mp3	28			4	भ०राम का **नि०नि० स्वरूप निरूपण** : राम का स्वरूप अद्वितीय सत् चित् आनंद निनि० व्यापक ब्रह्म है, स०सा० रूप अनेक हैं	
26	Voice 26.mp3	21			c	**धर्म-कर्म विकर्म अकर्म** एवं सामान्य एवं विशेष धर्म निरूपण, **अकर्म** निरूपण शेष है	
27	Voice 27.mp3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
28	Voice 28.mp3	45			d	**धर्म-कर्म विकर्म अकर्म** एवं **अकर्म** निरूपण : सब कर्म प्रकृति में हैं, **आत्मा को अकर्म द्रष्टा साक्षी अधिष्ठान देखने वाला ज्ञानी है**	विशेष
29	Voice 29.mp3	50			e	**धर्म-कर्म विकर्म अकर्म** एवं **अकर्म** निरूपण : नारायण ईश्वर व नर जीव का ससा० अवतार है,व्यवहार के लिये ससा०अनिवार्य है	विशेष
30	Voice 30.mp3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
31	Voice 31.mp3	48			f	**धर्म-कर्म विकर्म अकर्म** एवं **अकर्म** निरूपण : जड़ प्रकृति में ही सब कर्म हैं, द्रष्टा चेतन आत्मा अकर्म है वही तुम्हारा स्वरूप है	विशेष
32	Voice 32.mp3	38				सीताराम जगत के मातापिता हैं,व जगत भी सीतारामका ही स्वरूप है क्योंकि कारण से कार्य अभिन्न होता है, **सहस्त्रमुखरावण कथा**	
33	Voice 33.mp3	51				**श्रीरामजयरामजयजयराम** विवेचना, हमारा स्वरूप अकर्म द्रष्टा सच्चिदानंद आत्मा है व जा०स्व०सु० दृश्य कार्य-कारण रूप माया है	Imp
34	Voice 34.mp3	35				भ०राम का **नि०नि० स्वरूप निरूपण** : अकर्म निनि०द्रष्टा राम जीवों का स्वरूप हैं,सब कर्म मायाकृत देह इ०मन बुद्धि प्राण में हैं	विशेष
35	Voice 35.mp3	46				गीता १५/१६-२०: इस लोक में **क्षर अक्षर** २पुरुष हैं,क्षर/जा०स्व०कार्यमाया व अक्षर/सुषु०कारणमाया है, तीनों से परे **उत्तम पु०**	विशेष
36	Voice 36.mp3	35				भ०राम का **नि०नि० स्वरूप निरूपण** : सीताराम जगत के माता-पिता हैं, माता ही पिता को बताती है, **पाँच माताओं का वर्णन**	१
37	Voice 37.mp3	44				गीता १३/२-३: **क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दो पदार्थ हैं**, मेरी माया से बनने वाले सब देह क्षेत्र हैं, इनमें बैठकर देखने वाला जीव-ईश्वर क्षेत्रज्ञ है	
38	Voice 38.mp3	38				गीता अ०७ **:: मैं** और मेरी **माया** दो ही पदार्थ हैं, **जीव** मेरा अंश है अतः मेरा ही सच्चि० स्वरूप है, माया जड़ व चेतन प्रकृति २ रूप धारण करती है, **अपरा/जड़/ अष्टधा प्र०** - पंचभूत+मन+बुद्धि+अहंकार - जगतरूप, **परा/चेतन प्र०**-बुद्धि में मुझ ब्रह्म का प्रतिबिम्ब - जीव - जो प्रेरक मात्र है । दोनों प्रकृतियों से परे व दोनों का आधार अधिष्ठान द्रष्टा साक्षी मैं **ब्रह्म** हूँ ।	परम विशेष
39	Voice 39.mp3	39			6	हे हनुमान अग्नि के समान मेरा **नि०नि०**-सामान्य/अव्यवहारिक व **स०सा०**-प्रकट/व्यवहारिक दो रूप हैं । नि०नि०रूप से मैं ही **अमृत** या सत् हूँ और स०सा० रूप से मैं ही **मृत्यु** या असत् हूँ । **चार प्रकार के भक्तों का वर्णन**	विशेष
40	Voice 40.mp3	51				मृत्यु के अतिक्रमण का उपाय भ०की वाणी वेद है, सर्वज्ञ होने से ईश्वर के वचन सत्य हैं क्यों कि उनमें जीव के चारों दोष नहीं हैं-१ **भ्रम** २.**प्रमाद** ३.**विप्रलिप्सा/ठगी** ४ **कर्णापाटो** । ज्ञान द्वारा अज्ञान के नाश से ही अज्ञान के कार्य संसार का नाश सम्भव है	विशेष
41	Voice 41.mp3	32				गीता २/३०: **सत् असत् दो पदार्थ हैं**, नित्य द्रष्टा देही को **सत्** एवं दृश्य देह को **असत्** कहते हैं,सभी देह मेरी **माया** से बनते हैं	Imp
42	Voice 42.mp3	37				वेदान्त में **छः अनादि** वर्णित हैं,१अनादि-अनंत ब्रह्म,शेष अनादि-सांत :२माया ३ब्रह्म-माया सम्बन्ध ४ईश्वर ५जीव ६जीव-ईश्वर भेद	Imp
43	Voice 43.mp3	31				भ०जगत के अभिन्ननिमित्तोपादान कारण हैं,**उपादान** कारण कार्य में व्यापक होता है,कार्य होने के लिये **चेतन-निमित्त** आवश्यक है	ब
44	Voice 44.mp3	39				सृष्टि के आदि में अद्वैत सत् चित् आनंद से पूर्ण ब्रह्म ही था, अपनी माया से स्वयं ही नामरूप जगत का रूप धारण कर लिया	Imp
45	Voice 45.mp3	34				जीव का जन्म नहीं होता व मृत्यु भी नहीं होती, यही सर्वोत्तम सत्य है-मा०उ० । जन्म-मृत्यु भी कर्म है और आत्मा अकर्म है ।	A
46	Voice 46.mp3	47				जीव स्वभाववश दुःख और मृत्यु नहीं चाहता क्यों कि उसका स्वभाव सच्चिदानंद है जैसे पानी नीचे को बहता है व अग्नि ऊपर	Imp

47	Voice 47.mp3	34				जन्म मरण शरीर के होते हैं जीव के नहीं, ईश्वर अंश जीव अविनाशी है, हमारा स्वरूप जीव है शरीर नहीं अतः मृत्यु असंभव है	B
48	Voice 48.mp3	37				**पाँच माताओं का वर्णन**-जन्मदात्री, पृथ्वी, गउू, गंगा, वेदमाता, जीव और ब्रह्म का नि०नि० सच्चिदानंद स्वरूप निरू०, तत्वमसि	२
49	Voice 49.mp3	44				**५ भ्रम**-**१**जीव ईश्वर भेद, **२**आत्मा कर्ता-भोक्ता, **३**आत्मा-देह का संग है, **४**जगत ब्र०का विकार है **५**जगत ब्र०से भिन्न व सत्य है	
50	Voice 50.mp3	51				श्रुति में **सृष्टि क्रम**/जगत की उत्पत्ति की विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रयोजन ब्रह्म को बतलाना ही है, हमारा शिव स्वरूप ही सत्य है	विशेष
51	Voice 51.mp3	46				**५ भ्रम**-जीव ईश्वर भेद-५प्रकार,**आत्मा का स्वरूप,** आत्मा कर्ता-भोक्ता, संगभ्रान्ति, जगत ब्र०का विकार, जगत ब्र०से भिन्न व सत्य	विशेष
52	Voice 52.mp3	50				सरस्वती रहस्योपनिषद : संसार में ५ अंश हैं : **१अस्ति २भाँति ३प्रिय** - ब्रह्म का स्वरूप है व **४नाम ५रूप** - जगत को कहते हैं	***
53	Voice 53.mp3	38				**ब्रह्म जीव ईश्वर** व **जगत** का **स्वरूप निरूपण** तथा ब्रह्म और जीव के **स्वरूप एवं तटस्थ लक्षण**, अवान्तर और महावाक्य	मुख्य